Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

महात्मा गांधी का आर्थिक दर्शन और पर्यावरण संरक्षण

डॉ. गीता सिंह
प्राध्यापक अर्थशास्त्र,शास. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,रीवा (म.प्र.)

Article Info
Volume 5, Issue 3
Page Number : 114-118
Publication Issue :
May-June-2022
Article History
Accepted : 01 May 2022
Published : 30 May 2022

सारांश– गांधी जी का चिंतन उनके व्यावहारिक जीवन के अनुभवों पर आधारित था जो समाज के निम्नतम पायदान पर खड़े व्यक्ति के कल्याण को समाहित करने वाला था। उन्होने कोरी कल्पना नही की जैसी प्रायः चिंतक करते है अपितु उस पर आचरण भी करके दिखाया। यही कारण है कि उनकी मान्यतायें आज भी पूर्णतः व्यवहार मे लाए जा सकने योग्य हैं।

मुख्य शब्द–महात्मा गांधी, आर्थिक, दर्शन, पर्यावरण, संरक्षण।

आज जब विश्व में प्रगति के नये आयाम विकसित हो रहें हैं, विकास की आंधी बह रही है, सम्यता तेजी से आगे जा रही है, मानव चंद्रमा पर बसनें की योजना बनाने में लगा है, कई ऐसे प्रश्न उत्पन्न होते है जो महात्मा गांधी के सिद्धान्तों और अवधारणाओं पर सोचने को बाध्य करते है। निश्चित रूप से वें महान थे क्योंकि उनकी सोच मौलिक थी और मानव जाति के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति के कल्याण को भी समाहित करने वाली थी। उनकी अवधारणायें व्यावहारिक जगत से जुड़े अनुभवों पर आधारित थीं। यद्यपि आज कई बार यें अप्रासंगिक सी प्रतीत होती है, परंतु उनके विचार निश्चित रूप से व्यावहारिक थी।

महात्मा गांधी यद्यपि कोई पर्यावरणविद् नही थें। पर्यावरण पर उन्होनें किसी ग्रंथ की रचना नहीं की थी। न हीं उनके समय पर्यावरण प्रदूषण जैसी कोई समस्या विद्यमान थी। फिर भी महात्मा गांधी जैसे युग पुरूष ने पर्यावरण प्रदूषण संबंधी खतरे को समय से पूर्व ही महसूस कर लिया था। पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में गांधी जी का जीवन ही उनका संदेश था। उन्होने अपने जीवन में नैसर्गिक सिद्धान्तों को अपनाया तथा प्रकृति के प्रतिकूल किसी भी अवधारणा को अनुचित ढहराया।

जिस पर्यावरण संरक्षण पर हम आज जागृत हो रहे है उस पर्यावरण संरक्षण को गांधीजी ने अपने जीवन में आत्मसात किया था। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा तथा अपरिग्रह पर आश्रित एक नए धर्म और नई नैतिकता को जन्म दिया था जिसमें संसाधनों का बंटवारा पूर्ण था और प्राणी मात्र के लिए कोष्ठ आधार था।

गांधी जी का अनियंत्रित औद्योगीकरण का विरोध सर्वविदित है। मशीनीकरण के अतिवादी सर्मथक उन्हें औद्योगीकरण का शत्रु ही समझते थें। लेकिन उन्होंनें औद्योगीकरण के निर्रथक नही माना है उनका आग्रह केवल इतना था कि यंत्रीकरण मनुष्य पर हावी न हो। गांधी जी महान अर्थविद् थे उनका उद्देश्य था श्रम शक्ति की महत्ता को बनाए रखना और आर्थिक शोषण का विरोध करना।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

इस चिंतन में एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय सिद्धान्त का बीज निहित है। क्योंकि श्रम प्रधान अर्थव्यवस्था होने के कारण मशीनों ने न केवल सारे देश में अत्यधिक संख्या में लोगो को बेरोजगार किया है वरन पर्यावरण प्रदूषण को भी चरम सीमा पर पहुचाँ दिया है। दिल्ली शहर में अब न्यायालय के आदेश से सैकड़ों प्रदूषणकारी कारखाने शहर से हटाए गये।

गांधी जी ने कहा था कि आधुनिक शहरी औद्योगिक सम्यता मे ही उसके विनाश के बीज निहित है महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक 'द हिंद स्वराज' मे लगातार हो रही खोजो के कारण पैदा हो रहे उत्पादों और सेवाओं को मानवता के लिए खतरा बताया था। उनका मानना थ कि असली सम्यता अपने कर्तव्यों का पालन करना और नैतिक और संयमित आचरण करना है। टिकाऊ विकास का केन्द्र बिंदु समाज की मौलिक जरूरतों को पूरा करना होना चाहिए।

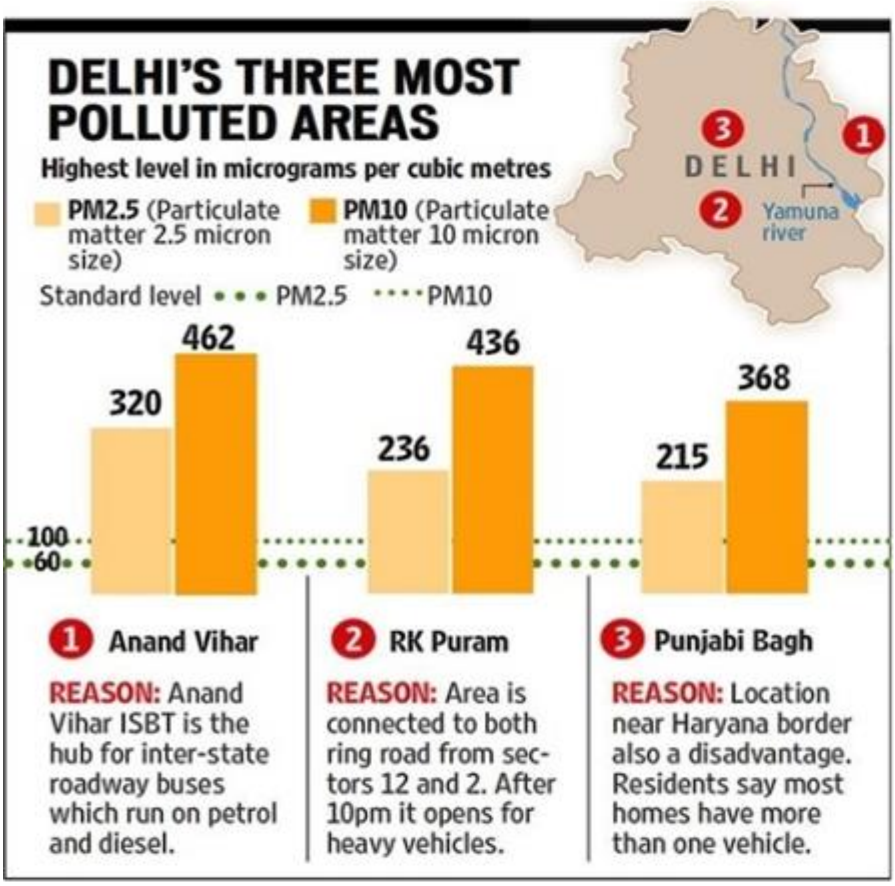

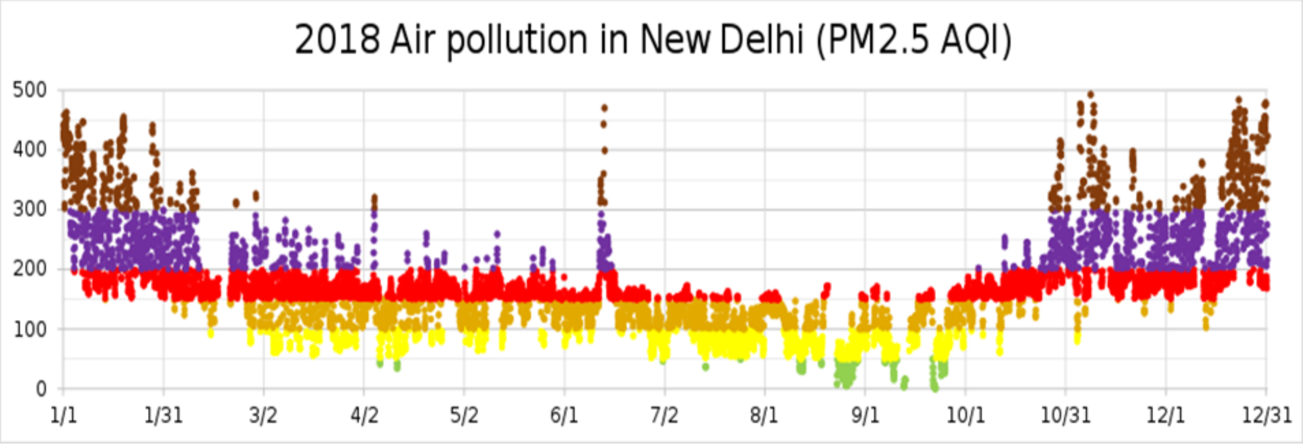

उक्त ग्राफ में दिल्ली मे औद्योगीकरण को वायु प्रदूषण के भीषण चित्र का विवरण प्रस्तुत है विकास आवश्यक है किन्तु उसकी कीमत मानव स्वास्थ्य नही दिल्ली मे वायु प्रदूषण का सम्पूर्ण दिल्ली वासी प्रभावित है बिना मौसम दिल्ली धुंध से ढका रहता है। जो मानव के लिए घातक है।

औद्योगिक विकेन्द्रीकरण –

गांधी जी बड़ी मशीनों को मानव के लिए अभिशाप मानते थे उनका विचार था कि समाज में घृणा, द्वेष और स्वार्थ में जो वृद्धि दिखायी देती है वह सब मशीनों का ही फल है। मशीनों के प्रयोग के परिणामस्वरूप ही मानव का शारीरिक एवं नैतिक पतन हुआ है, औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप उत्पादन थोड़े से व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित हो जाता है और बहुसंख्यक वर्ग के अत्याधिक निर्धनता में अपना जीवन व्यतीत करना होता है।

औद्योगिक विकेन्द्रीकरण का गांधी दर्शन सिद्धान्त इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। कि केन्द्रीयकृत औद्योगिक व्यवस्था के अंतगर्त किसी क्षेत्र विशेष से संसाधनों का दोहन, फिर उसका किसी औद्योगिक केन्द्र तक स्थानान्तरण संयंत्रों से कच्चे माल के उपयोग से वस्तु विशेष का उत्पादन और अततः विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादित वस्तु का संभरण परोक्ष रूप से पर्यावरण प्रदूषण में सहायक है। इससे प्रदूषण बढ़ता है एवं ऊर्जा का अपव्यय होता है।

गांधी दर्शन आज के परिपेक्ष्य मे भी अत्यंत उपयोगी है हमें छोटे–छोटे यंत्रोपकरण, उपस्कर और औजार एवं हथियार चाहिए जो मनुष्य के साथी हो और उसके व्यक्तित्व के उत्प्रेरक का कार्य करें। छोटी–छोटी कार्यशालाओं में मनुष्य श्रम प्रधान तकनीकी के जरिए उत्पादन करे और बेकार न रहें।

गांधी जी का मानना था प्रत्येक गांव एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करेगा। वें खादी को भारत की राजनीति एवं आर्थिक समस्याओं का अमोध हल मानते थे। उनके द्वारा आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी के विचार का प्रतिपादन किया गया। गांधी जी के अनुसार देश की अर्थव्यवस्था वहॉ की जलवायु, भूमि और वहॉ के निवासियों के स्वभाव को ध्यान में रखकर निश्चित की जानी चाहिए।

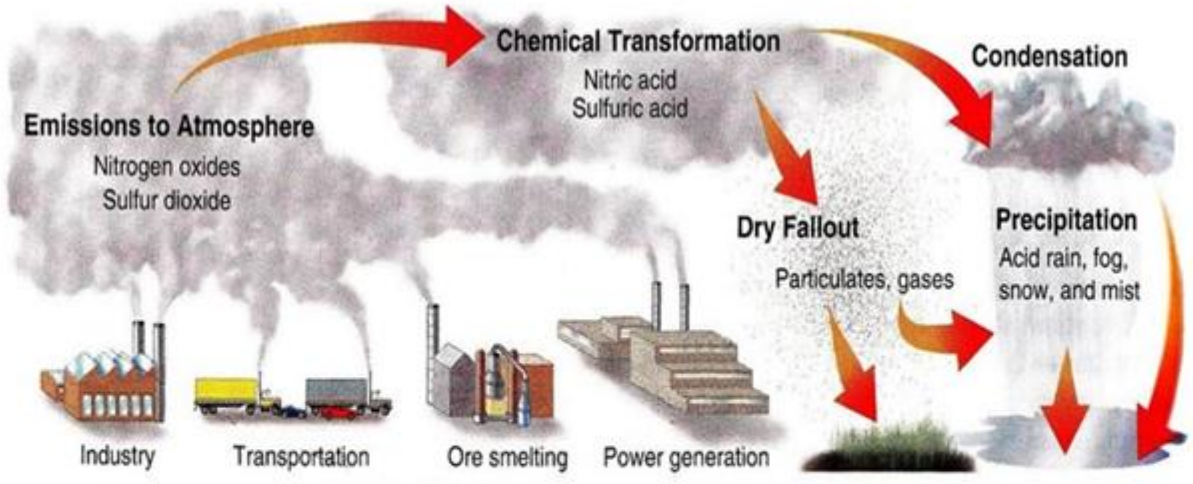

पर्यावरण प्रदूषित न हो इसके लिए गांधी जी ने ग्राम स्वराज की कल्पना की थी। 'हरिजन सेवक' में एक स्थान पर उन्होनें लिखा है कि हर एक गांव का प्रथम कार्य यह होगा कि वह अपनी जरूरत का तमाम अनाज और कपड़े के कपास खुद पैदा करें। उसके पास इतनी सुरक्षित जमीन होनी चाहिए जिसमें पशु चर सके और गांव के बड़ो तथा बच्चों के मन बहलाव के साधन और खेलकूद के मैदान बगैरह का बंदोबस्त हो सके, उन्होने कहा था कि हर गांव को पूर्ण रूप से एक आत्मनिर्भर इकाई होना चाहिए।

जिस वस्तु का उत्पादन कुटीर उद्योग द्वारा किया जाय उसका भारी उद्योगों द्वारा उत्पादन नही किया जाना चाहिए। जिस वस्तु का उत्पादन कुटीर उद्योगो द्वारा संभव न हो उसके लिए भारी उद्योगो का उपयोग किया जाना चाहिए। बड़े उद्योगो द्वारा उत्पादन केवल उस स्थिति में होना चाहिए जब उनका विकल्प न हो।

प्रदूषण एवं गरीबी –

पर्यावरण प्रदूषण एवं गरीबी का चोली दामन का साथ है। गरीबी दूर करने के लिए गांधी जी अहिंसक अर्थव्यवस्था अपनाना चाहते थें। यह कुदरत का एक बुनियादी नियम है कि हर रोज प्रकृति केवल उतना पैदा करती है जितना हमें चाहिए और यदि हर एक आदमी जितना उसे चाहिए उतना ही ले ज्यादा न ले तो दुनिया मे गरीबी न रहे और कोई आदमी भूखा न मरें।

गांधी जी ने कहा था – भावी पीढ़ियों के हित चिन्तन के बिना धरती को विनाश के कगार पर पहुचा देना खुले आम हिंसा का प्रदर्शन है। हमें अपनी जरूरतों का नियमन करना चाहिए और स्वेच्छा पूर्वक अभाव भी सहना चाहिए जिससे गरीबों का पालन पोषण हो सके। यह धरती अपने प्रत्येक निवासी को आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यथेष्ट साधन उपलब्ध कराती है लेकिन हर व्यक्ति की असीमित आवश्यकताओं को पूर्ण नही कर सकती है।

प्रकृति मनुष्य की जननी है मानव हित प्रकृति के साथ समरस होने में है न कि उस पर उच्छृंखल आधिपत्य जमाने में। आधुनिक तकनीक मानव केन्द्रित, प्रकृति संगत बने, प्रकृति के साथ उसका विरोधाभाव न हो और वह

मनुष्य की सजृन शीलता के अनुरूप हो। आज जबकि पाश्चात्य देशों में लोग गांधी जी को और भी याद कर रहें हैं, हम भारतवासी उन्हें और उनके बताए मार्ग को भूलते जा रहें हैं।

आर्थिक विकास भी हमारी आवश्यकता है परंतु पर्यावरण प्रदूषण के शर्त पर नहीं हमें अर्थव्यवस्था के विकास के साथ–साथ मानव हित में पर्यावरण का भी ध्यान रखना होगा अथवा हम आने वाली पीढ़ी को विनाश ही सौप पायेंगें। हमें टेक्नोलॉजी ऐसी अपनानी चाहिए जिससे हम पर्यावरण के साथ विकास कर सके जिससे मददगार साबित होगा नैनो टेक्नोलॉजी के अनेक फायदे है जो विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण भी होगा।

1.नैनो टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से ऐसी संसाधन प्रक्रियाओं का विकास किया जा सकेगा जिनमें अवांछनीय उप–उत्पादन कम से कम बनेगें और पर्यावरण सम्मत भी होगें।

2.नाभिकीय ऊर्जा सयंत्रों से भी ईधन के संसाधन, शोधन और अपशिष्ट प्रबंधन में नैनो फिल्टरों के प्रयोग द्वारा खासकर नाभिकीय कचरे से उत्पन्न प्रदूषण को कम किया जा सकेगा।

3.पर्यावरण संरक्षण की चुनौती के युग में वायुमण्डल मे ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ते प्रभाव के कारण आज हमारी धरती पर ग्लोबल वार्मिंग का खतरा मंडरा रहा है इसे नैनो टेक्नोलॉजी से कम किया जा सकता।

4.नैनो पदार्थो के उपयोग से अंतरिक्ष यानों और उपग्रहों आदि मे मौजूद ऊर्जा स्त्रोतों, सौर पैनलों, संचार युक्तियों, संवेदकों आदि को भी अधिक दक्ष एवं हल्का बनाया जा सकेगा।

5.वाहनों को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए ईधन के जलकर निकलने के निकास मार्ग पर उत्प्रेरकी परिवर्तनकारी लगाए जा सकते है।

6.विभिन्न प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण को रोकने एवं कम करने के लिए नैनो टेक्नोलॉजी मे विभिन्न प्रकार के विकल्पों का अविकार है। जिससे इस्तेमाल कर प्रदूषण कम किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. डॉ. आर. के. गुप्ता, पर्यावरण शिक्षा एवं संरक्षण, Swaranjali Publication.
2. पर्यावरण संरक्षण, म.ना. जोशी, सुखदा प्रकाशन।
3. गांधी दर्शन, चन्द्रदेव प्रसाद, Atlantic Publication.
4. गांधी दर्शन उद्योगवाद एवं संस्कृति, डॉ. संगीता माथुर – New Man Publication.
5. गांधी विचार और पर्यावरण, चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, सर्व सेवा सिंह वाराणसी।

6- पर्यावरण और सतत् विकास पर महात्मा गांधी, सत्यनारायण साहू – डादन टू अथ अगस्त 2018